ऊँ

श्रीरूपभवानी – रहस्योपदेशः

ॐ

श्रीरूपभवानी - रहस्योपदेशः

संपादकः-

विद्यावारिधिः, पुरातत्त्वविशारदः,

डा० शिवनाथ शर्मा शास्त्री

साहित्याचार्यः, डी. ओ. सी. इत्यादि

प्रधानाध्यापकः

गवर्नमेंट-पाठशाला कश्मीर.

श्रीनगर

प्रकाशकः-

श्री अलखईश्वरी साहिबा ट्रस्ट,

दिद्दामठ, नवाकदल,

श्रीनगर.

२००७.

प्रथमावृत्तिः १०००

ॐ

श्री पराभट्टारिका महाशक्ति 'तदा तदावतीर्याहं' इत्यादि अपनी शुभ-प्रतिज्ञा के अनुसार जगत-कल्याण के कारण समय २ पर शरणीभूतों के कुलधर्म-जातिधर्म तथा देशधर्म की व्यवस्था को पुनः संस्कार करके तथा रक्षा और समुद्धार के लिए अवतीर्ण होती है। अनन्तर भौतिक-रूप में अपने शारीरिक-कार्यक्रम से देश को शिक्षा देती हुई भक्तजनों को अपने रहस्य शास्त्र से उद्धार करती है, यह मर्यादा सनातन काल से श्रद्धेय एवं प्रचलित है।

इसी नीति-रीति को प्रत्यक्षावस्था में दिखाने के लिए श्रीजगदम्बा अपने अंशरूप में सन्न १६७७ तदनुसार सप्तर्षि संवत ४६६६ में अपने सद्भक्त श्री पं० माधव ज्यू दर के घर में माधवी-पूर्णा के असामान्य काल में श्रीरूपभवानी नाम से आविर्भूत हुई। आपकी अलौकिक बाललीला और प्रौढलीला देख कर उस समय के बडे २ कुलीन-सिद्ध-महात्मा और आम्नाय धुरन्धर चकित से रहकर शरण आये। आपने अपने पितृकुल एवं श्रद्धालु शिष्यों तथा भक्तजनों को अपनी मातृभाषा में 'रहस्योपदेश' से उद्धार किया। और आगामि काल के लिए इस पथप्रदर्शक उपदेश को छोड कर (आप संवत ४७६६ तदनुसार विक्रमी सन्न १७७७) माघकृष्ण-सप्तमी को अपने कथनानुसार अवस्था के सौ (१००) वर्ष में परमधाम में लीन हुई।

इस काल में आपने जो २ कार्य देशशिक्षा के लिए व्यवहार में लाये और सिखाये हैं, वह निकट-भविष्य में भक्तों को आपके पवित्र 'जविन चरित्र' द्वारा हिन्दीभाषा में सविस्तार पुरस्कृत करने की भी आशा श्रीअलख ईश्वरी की कृपा से पूर्ण होगी।

रहस्योपदेश :—

यह रहस्य-उपदेश आपके निर्वाण काल से लेकर कुच्छ समय तक गुरुक्रम में व्याख्यान रूप से ही चलता रहा, पुस्तक की आकृति में न था। फिर शक्ति की दुर्बलता के कारण इन उपदेशों ने ग्रन्थ का स्थान लिया, कहीं २ इसकी प्रति शारदा अक्षरों में उपलब्ध थीं, विशेष करके फार्सी-अक्षरों में इस ग्रन्थ का बहुत प्रचार था, इसी कारण इसमें कहीं २ पाठ-भेद भी होता चला आया। कुच्छ समय पहले इन वाक्यों का मुद्रण भी हुआ था, परं मुद्रक को जैसा आदर्श मिला, वैसा छपा दिया।

दो वर्षों से मैं इस शुभकार्य के अन्वेषण में था, श्री जगदम्बा की इच्छा और आज्ञा से मुझे एक प्राचीनतम आदर्श प्राप्त हुआ, फिर और भी तीन प्रतियां एकत्रित करके इनके संमेलन से पं० हरभट्टशास्त्री जी के संशोधित आदर्श की भी सहायता से इस संस्करण को पूरा किया। आशा है, अब मूल-ग्रन्थ से इस संस्करण में कोई न्यूनता नहीं रही है। और यह देश का कल्याणकारी होगा।

विषय :—

इस सदुपदेश में श्रीअलख्-ईश्वरी जी ने अद्वैत शैवमत के अनुसार कर्म-उपासना और ज्ञान के सदुपदेश किये हैं। राजयोग का क्रम एवं समाधि का वर्णन भी किया है। बाह्ययाग तथा अन्तर्याग, पूर्णाहन्ता और उसका याग भी दर्शाया है। तात्पर्य है, कि योग्य अधिकारी साधक के लिए कोई भी सिद्धान्त इस में छिपा हुआ नहीं है।

श्री अलख् ईश्वरी ट्रस्ट के कार्यकर्ता आजतक ऐसे शुभ कार्यों म अपनी पवित्र भावना तथा निष्काम-वासना से तत्पर हैं।

जिन्हों ने आजतक श्रीअलखईश्वरी जी के मन्दिर आदि शुभ-कार्यों के बनाने में अपने कायाकष्ट से धन्यवाद के योग्य निष्काम कार्य किये हैं ।

इसी ट्रस्ट की पूर्ण-सहानुभूति से मेरे इस संपादन-कार्य में विशेष उत्साह हुवा, अतः मैं इस ट्रस्ट को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ इसकी सद्भावना को सराहता हूँ ।

यह ट्रस्ट दिये हुए संशोधित-पुस्तक के विषय में श्री पं० हरभट्टशास्त्री जी की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है, जिन्होंने ट्रस्ट को ५ वर्ष पहले पाठ पुस्तक शुद्ध करके दिया था।

मेरी पूर्ण आशा है—यह मुद्रित संस्करण श्री अलख ईश्वरी जी की पवित्र-वाणी है, अतः श्रद्धालु भक्तजन इसका पाठ करने से जगत् में यश कथा ज्ञान पाकर पारलौकिक श्रेयः प्राप्ति के पात्र बनेंगे। और इस पवित्र-पुस्तक को अपने २ घरों में पूजा स्थान देकर अपने घर तथा परिवार को व्याधियों से रक्षा करेंगे। क्योंकि इसमें श्री अलख ईश्वरी जी का यही वरदान है॥

ओं शम्। संपादकः

१५-६-२००७ शिवनाथ शर्मा शास्त्री
नरवीरस्थान साहित्याचार्यः
श्रीनगर-कश्मीर डी. ओ. सी.
इत्यादि

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेशः



शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥
अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ २ ॥
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ३॥
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे ह्यानन्दविग्रहम् ।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥ ४ ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षात्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७ ॥

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।
यः साक्षात् कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥

श्रीगुरवे नमो नमः ।

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ्[1] विचार्यम्
बहुबल्[2] संबाहु एकतं[3] स्वयंबू परमाकारी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य्[4] तती परमुगती[5] ॥१॥
शुद्द[6] युक्त-मूलादारी कुण्डली[7] मण्डली गौरी ।
स्यद्द अर्थ सूक्ष्म्[8] सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी ।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमुगती ॥२॥

---

१ 'सुहत्' क. 'सुहृत्' ख. 'सङ्गत्' च. पाठः ।
२ 'बहुबलू' घ 'बहुबलूग' ख. 'बहुबाहुक्' क. पाठः । ३ 'एकोतं' ख. पाठः । ४ 'निर्वाणरहस्' क. ग. च. पाठः । ५ 'परमा गती' क. 'परमा गतिः' ख. पाठः । ६ 'शुद्धोक्त' ख. 'शुद्युक्त' च. पाठः ।
७ 'कुण्डलिनी मण्डले' क. ख, ग. घ, पाठः । ८ 'सूक्ष्मौ सुषप्ते' ख. पाठः ।

तद् रूपमयी तत्[1]परमगती स्थानी प्रवाही[2]।
गति गट् पूरनी छुदा देह तृपितं[3]
समर्थ[4] स्वामी परमार्थ निदानम् ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥३॥
उपनिषद् पारिजाता अख्यय् फल् एक[5]
अर्थी सद्‌ग्वर् योगी अदेहो[6] पुरानम् ।
बहु तीज़ुवानी सुशीतल् सुदर्शन्
निँनायु[7] अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥४॥
पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु-दनाडी असंख्य कामू कर्त[8]।

---

१ 'त्वत्' च. 'तत्परमगति' क ख. ग. ङ, पाठः । २ 'प्रवाहे घ. पाठः । ३ 'तृप्तिं' ख. पाठः । ४ 'सुमर्थ' घ. 'मन' च. पाठः । ५ 'अक्षय फल एकार्थी' क. एकोऽर्थी' क. ख. घ. पाठः । ६ 'आदितो' च. पाठः । ७ 'निर्वायो' च. पाठः । ८ 'असङ्ख कामकर्तये' ग. पाठः ।

यिहुय् राजु-यूगी दाता पिता सुय
सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी[1]
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥ ५ ॥

निर्लज्जा रमनू परिरूफ्[2] निदारा
सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ् ।
अदृष्टो अग्रन्थो निज़ानो प्रसन्नो[3]
आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ़[4] ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥ ६ ॥

तुत्र वित्र न आसा न[5] गुत्री न बाशी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम्[6] ।
शयुम्-थान वासी आदि सर्वमध्यं
जिता संन्यासी ब्यन-बिन्दु-नादी ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥ ७ ॥

---

१ 'अर्थापूरनी' क. ख, ग. पाठः । २ 'पररूप' ग. पाठः । ३ 'प्रसन्दो' क. ख. ग. पाठः । ४ रूपस्' क, ख, घ. च. पाठः । 'रूपम्' ग । ५ 'न' च पुस्तके नास्ति । ६ 'रूफ' घ. । 'रूपस्' क. ख. पाठः ।

न जाया न जन्मी दग्द[1]कर्मकाण्डी
यथा शान्तबस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह सर्वत्र-सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल निराकार्॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती॥८॥
अहं[2]त्व-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
यि[3]थु न आसि-मीलिथ् कवलदलँ[4] जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् ब्रछँ[5] ना आसे
लगि न[6]-त कथा वाचि फला रस ग्वनी।
शिला ज़ल सगँ[7] अग्न दाह बस्रो
साद् तार्यँ[8] पसमु सर्व-अन्तर सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥९॥

---

१ 'दग्ध कर्म कर्मकाण्डी' क. ख. पाठः। २ 'अहन्ता' ग. पाठः
३ 'युथा न' च 'यथा' ग. पाठः। ४ 'दलत' क. ख.
ग. घ ङ. 'बिन्द' ग. पाठः। ५ 'वृत्त' क. ख. ग. पाठः।
६ 'ना' च पाठः। ७ 'जलगस्' ग पाठः। ८ 'तापसो' क. पाठः।

वेद्‌वाख्-अर्था अमृतनदी संप्रीता[1]
अनेक प्रवाही समनय्[2] षोडशचन्द्र कल् ।
स पण्डिता समदर्शगनी अर्चनीदीव्
सु-निर्मल तोत्री सथ् तव[3] पाठि् ।
सर्वत्र जगद्-गूरु सेवा अनन्तपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥ १० ॥

निर्वाणदशश्लोकी - स्तवः ।

—:०:—

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शद्धं अत्यन्त विद्याधरम् ।
लल्-नाम लल् परमाँ[4] ग्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम् ॥ १ ॥
कृपा करे सर्व रूगाँ[5] हरे

---

१ 'संपीता' ग. घ पाठः । २ 'समन्वय्' क. ख. ग. पाठः । ३ 'तव-पाठी' घ. 'स्तव पाठी' ग. 'तौ पाठी' च, पाठः । ४ 'परमं ग्वरम्' ख. पाठः । ५ 'सर्वराग' ग. 'रागान्' ख. पाठः ।

ज्ञांनी छ़ाल् फिरे[1] तान्-तान् व्यसरे ।

समादि--देह संमरे सयि अग्नवतूरू

अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले ।

गीता पडे व्वय् चे़ने कपाल मूचे़

गूपाल जी नाट्यं[2] करे गूपी--सहाय् ॥ २ ॥

युंस[3] हुमसूय् मदुरस् ग्ययि कनि दिये

कन्द् हुंहे खंड हुमि[4] पनन् दीह् ।

श्रीफल् ज़ाफल् सुफल्[5] हाये

मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य् ॥ ३ ॥

समिव् त्यकारन् कि-न् अकुय् व्वय्

पान-ति व्वयि केंह्[6] यिहुय् अकुय् ।

यज्ञस् व्यह्यो-त बस्म कियवे

अंग न व्वयि-केंह् आंगन् द्राव् ॥ ४ ॥

१ 'सिर्यस्' ख, पाठः। २ 'नाट्' क. ख. घ 'नाएट्' च. पाठः।
३ युस् होम सूय्' क. ख. पाठः। ४ 'हुमि' क. ख. ग. पाठः। ५ 'साफल् हायि' क.ख. पाठः। ६ 'के' क. ख. ग. पाठः।

पाता_ छ़ाल फीरिथ् तां खाडुम्
म्यचि़-त कज़न् मंन्ज़ि अनुम् पय् ।
अद नद् वुदुम्-त गल-मद् प्खवुम्
प्रबातुं साथ् स्वंथु प्रज़ांलु-तां ना किंह् ॥ ५ ॥
हिज़ि अनि पाताल गगन गमे
मूरत् नाँ मूरत् पाँच़ तत्त्व् ।
च़ीतन् मले शून्य तिह् गले
शन् वूनिय् सा छ्यसं सतँ ॥ ६ ॥
आसे ब्वये न-आसे पान्
नाँसे ग्रास् करे पवन् ।
रसँ् कासे ना किंह् फासे
ना सीर् काह् आँ सीर ब्वय् ॥ ७ ॥

---

१ 'ता' क. ख ग घादौ नास्ति। २ 'अनुमस्' ग. पाठः। ३ 'मथुम्' ग. स्वथु प्रज्वलुता' क. ख. ग घ पाठः। ४ 'सुरत् सुरत् ना पञ्च' क ख.घ. पाठः। ५ 'सामत्' घ. पाठः। ६ 'ब्वय्' क, ख. पाठः। ७ 'ना आसि' च. पाठः। ८ 'नरकस् कासे' क. ख. पाठः। ९ 'ब्वह्' क.ख.घ. पाठः।

द्रायस्--त न्येरवंनु आव[1]ह्यम् ज़ंगे
चंय न-त कारुन् मंगे कस् ।
रङ्ग रङ्गी गुल् फ्वंलिह्यम्[2] अङ्गे
म्य न-त व्यय च्यत्थ् चंयङ्गे कस् ॥ ८ ॥
[3]पदवी विना मा आव् पादू
वादा पूरंख आद् छु वासा[4] ।
[5]अकनु नाबद् अकन् खासिय्
परम पदय् परमानन्द् हांसिल् छुह् ॥ ९ ॥
रूपाय् ता यिह् आयिय् वरा
नरा निरालम्बा रूफ् ।
कृपा पर आनन्द जान वरा[6]
अवतार रूम-रूम रूफ् ॥ १० ॥
स मुद्र प्याल्-त मदुर वासन्

१ 'आयिम' ग. पाठः। २ 'फ्वलुहम्' ग. 'फुलाह' च पाठः। ३ 'पाद्' ग. पाठः। ४ 'वास्' क. पाठः। ५ 'अकनी' खासी' घ. अकान् नावाद् अकनी खासी परम पद्' ग पाठः। ६ 'जान वारा' क ख. ग. पाठः।

अवय् क्या सन मङ्ग तथ्[1] ।
ज्ञान रूप-तं शून्या आसन्
आसुन न-आसुन सूतिय् छुह् ॥ ११ ॥

[2]यवय् ध्यान बक्चिश् करे
तवय् ज्ञान आदरे पान् ।
यवय प्याल बसमूँय[3] करे
तवय लय् सुमारे स्मरे पान् ॥ १२ ॥

युस् तौख् त्रावि-तँ[4] मोख् मिलावे
प्रयना प्रथम् लागे प्रार्[5] ।
वथरि ज्ञान-त् पान् तलाँडे[6]
शून्यस् शून्या सूत्य मिलावे ॥ १३ ॥

[7]स्वर रंत्रावि-त ह्राँ[8] ना मङ्ग
तीर् लायि-त्-त्रावे सङ्ग ।

---

१ 'वज्' क. ख. ग. पाठः । २ 'यवा' 'तवा' इति च. 'यव' 'तव' क. ख. घ. पाठः । ३ 'भरिम् मै करे' घ. च. पाठः । ४ 'त्राविथ्' क. ख. ग. घ. ङ. पाठः । ५ 'प्रैना प्रम लारे प्रार । मथूर्' क. ग. घ. 'प्राखिन्' ख. पाठः । ६ 'तलरे' क. पाठः । ७ 'स्वर त्रावित' क. ख. ग. पाठः । ८ 'तृह' ग. पाठः ।

शेरे गङ्ग—त न्यथूय नावे
        द्रह् पाथि-त[1] अर्जुम ब्रोंह्[2] ॥ १४ ॥
शून्याह्[3] अंशा आयाम् अथे
        गंज् सुमारुम[4] तवय् सूत्य ।
यव-सूत्य-ज्ञन् व्यपदावुम
        तिय् ठहरावुम मनस्-सूत्य ॥ १५ ॥
ग्वारिथ् संमरिथ्[5] शून्या खाडुम
        पारुद् मारुम तवय्[6]-सूत्यय् ।
पंच-अग्ना लाल चड़ावुम
        ग्वाश् प्रज़ालुम तवय-सूत्य ॥ १६ ॥
न क़रुम रुत् न यछ ज़ानुम
        ज़ि रुतुय न-त रुतू किंह् क़रुम नांव ।
मूद् मुंतुय दीह् संदारुम

---

१ 'पाथ्योम्' ख. ङ. पाठः। २ 'ब्रम्' क.ख. पाठः। ३ 'ज्ञान' क.ख.घ.ङ. पाठः। ४ स्वम्बरुम्' क. खादि पाठः। ५ 'स्वम्बरिथ्' क. खादि पाठः। ६ 'तमिय सूतिय' ग पाठः।

न त ज़ीवन्तु मारु माव् ॥ १७ ॥

आगर् फीरिथ् ताय् ग्रज़ोम[1]
बुगवाज़ ह्रुय सगांवु मांव् ।
ओरय[2] कृपा तिह् आलम् बरुम्
योड[3] किंह् न स्वरुमाव् ॥ १८ ॥

प्रबा[4] ती-ज़य व्वन्दि आदरुम्
रूम रूम ज्योथ् तरुमांवँ[5] ।
कृष्ण-रूपी ब्रह्म स्वरिथ्
स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा ॥ १९ ॥

ग्वर-म्वंखि ध्याना ध्यायिरे
चरण हृदय कमल् ।
[6]तुल् पवन् मूल शून्या
ऊर्ध्वमुखी गगन मण्डल् ॥ २० ॥

---

१ 'फेरथ् तय् ग्रज़ुम्' क. ख्रादि पाठः। २ 'औरकि कृपा सूतिय्' ग. पाठः। ३ 'योर न किंह्' क. घ. ङ. पाठः। ४ प्रबाते ज्वय्' ख. घ. पाठः। ५ 'तरूं' क. पाठः। ६ तुल् मूल पवन्' ग. 'मूल शून्याह्' ख. पाठः।

नाना-रंग् शास्त्र चतुर्वीद्
पानुय्[१] मान् तह् नद् सगवान् ।
नाना-प्रकार ध्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना ।
पूरंक् मनय् स्मेरे[२] निराकार् ॥ २१ ॥
सारिथ् गंदु त्रांविथ् ग्वाशस् चायस्
मांरिथ् सांरि इम् च्यांनि पांछ इन्दय् ।
तवय् सहजकलि यूग् सांदिथ्
सर्ववादि ज़ांनिम ज्ञान-पानस् ह्यहुं[३] ॥ २२ ॥
दरनी प्रांवुम्-तु स्वरने प्ययस्
हरा व्वज़् चूय् बर् वुसरुम्[४] ।
दिम कोसुम ज़रि तां आसुम च्‌यि[५]
आस् कंरूथम-तय् खांस् बरंम्[६] ॥ २३ ॥

---

१ 'पान मान' च. 'मानु' ग. घ. पाठः । २ 'स्मरे वानी' क. आदि पाठः । ३ 'ह्यहुय्' ग. पाठः । ४ 'हरा तिय् चय् बर् वमुम' च. पाठः । ५ 'जरेत आसुय् चयय्' ग. पाठः । ६ 'बरुम्' क. पाठः ।

सहज़् सिपर् पूरिथ्[1] द्रायस्
दितिनम् ज़ुह्-पर् शाही-त् शाह् ।
हिश् छयस् सहजस्[2] लांगिथ् बाहज़न्
ह्यंति[3] वाह-ज़न् तोतन्-त हार्य गिन्दिम्[4] ॥२४॥

पूरिथ् सहज़ सिपर-तय्
तुरगस् ज़ीना लगू रव् ।
पोशनूलन् तय वीना वज़े
करानी शंख-शब्द् तय् ।
गंटा वायान् क्रियनद् बुज़े
दिवान् छयस् शंकरस् गंडु ॥ २५ ॥

हाल् मलि तय ज़ाल् वहारे
प्रान् लांडे[6] मारे मीन् ।
रूग् गालि-तय यूग् संदारे

---

१ ‘पैरिथ्’ च. पारिथ् ’ क ग. पाठः । २ ‘सह्ज़न् लांगिथ् बूह्ज़न्’ क. पाठः । ३ ‘ह्यतु’ ग. पाठः । ४ ‘गिन्दुम्’ ग ‘भिन्दूमस्’ घ पाठः । ५ ‘बाहन् घ. पाठः। ६ ‘लोर’ क. ख. पाठः ।

बूग आहारि करे शरीर ॥ २६ ॥

मूर् गौव् सु फ्वलि अंग् मेलने

अंग् सवारे बंग् निवारे

यिह् न फले तिय वले

जन्त्र् तन्त्र् अनाहत् अनामय् अत्तय् ॥२७॥

सावदान् खेले अंग् नचावान् रहे

अंग् प्रज़लान् थ्यर वासन् दारान् ।

अटल सावदान् वह् आप भगवान्

ब्वह् शिव-गथ् तय चूह शिव पान् ॥ २८ ॥

वर दिथि-त ब्वह नेरय-वासा[1]

भूमि पाद् [2]गमे रसा रसा ।

ख़सान्-त शब्द शुनुम आहंग्

सारंग् राग वीना-त च्यंग् ॥ २९ ॥

---

१ 'वंय वासा' घ. पाठः। २ 'पाद गवाँ रसा' घ. पाठः।

युसुय् सहाय सुय पान[1] आसान्
[2]अथवासा शिव-तां शून्या कस् ।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुह् शरीर थावे पानस् ब्रोंह् ॥ ३० ॥

[3]पर् वहारे सार्थी[4] तारे
दुयी ब्वह् गाले आसे तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यरख़्लासे
तस् पान पानय् कल्पन् कासे ॥ ३१ ॥

नाव् तारा वाव् सवारा
ना-रंग ना वर्न त न गूथर् ।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पत करि वारय्[5]
[6]कं-हंन्दूय् दार्-त कस् चारे ॥ ३२ ॥

दियि अस्य-ति तारा त्रीय् औतारि

---

१ 'पानय्' क. ख. पाठः । २ 'अथ् वासनि' 'वासञ्' क. ख ग. पाठः ।
३ 'परवारि' क. ख. ग. पाठः । ४ 'साथा' ग. पाठः । ५ 'वारिय्' ख पाठः ।
६ 'कहन्दु दारि-त कस् दारे' क. ख. पाठः ।

युसु ग़ारान् सुह् सूतिय्[1] छुह् ।
ब्रोंह् ब्रोंह् पकि-त् दूह् मांव् लोसे
न्यथ्य् पोशि-त् सुय् छुय् साथ् ॥ ३३ ॥
यिथिस् वावस् थरू मा खोरे
मुच़ रोज़ि तह् क्याह् छुस् ज़ाफ् ।
[2]च्यथ् बाज़िरिथ् ज़ाथ मांव् सोरे
छिविथ-त् थुरिज़े कति क्या रूफ् ॥ ३४ ॥
युस् मनि ह्यये[3] ध्यान--त् पानस् तोले
कुँह् न गेलि--त् कैंसि न गेले ।
ज़ागि हरस्--त् लाग्यस बेले
पानय् पानस् सूंत्य मेले ॥ ६५ ॥
संतोश समाद् एक[4] आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ् ।

---

१ 'सूत्य् छुय्' क ख. पाठः । २ 'स्यथ् बाजिरिथ्' क. ख. । 'सित' ग. पाठः । ३. 'हिय्' घ. पाठः । ४ 'एकासन्' घ. पाठः ।

दृढ़ किया वालवाशी आँखियों का

ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।

सूक्ष्म रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से

तुम्हारे चरण हृदय में बसाया ॥ ३६ ॥

अपने घर आया आप साँई

जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।

यह बोध आया गुरू की बडाई

जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व बताईं ॥ ३७ ॥

[1]येव तूड़् ज़लिय् तिमय् वल अंबर्

[2]येव ब्वछि ज़लिय् आसख् तृफथ् ।

तिमय् आहार् बुरुत् युक्त यूग् कर्

रूग् गलिय् त आसख़ म्वखत् ।

तेलिय्[3] निष्कल् तुष्टीय् विशेषा

खेल् मीलिथ–तय आनन्द च्यनु ॥ ३८ ॥

---

१ 'यवा' ग.घ. पाठः। २ 'यवा' ग.घ पाठः। ३ 'त्यलि' ग. पाठः।

बाग च़ायिस् बागे आयस्
परमा-सरस् नारस् त नरस् ।
शरने आयस् लक्ष्मीश्वरस
श्री सत् ग्वरस माधवा शिवस् ॥
सीवादीवस् साकारस् निराकारस्
अन्तरकिस् सत·सूय व्रतस् ॥ ३९ ॥
अहम् पदव् सदा माधव्
शिव रव् हंसा अनुम्[1] ।
म्य-दाव् प्याल बरिम्[2] मो मदकिय्
म्य-दाव् हाल प्यवीम् सु-दाव् ॥ ४० ॥
दीह[3] आनन्द नद मया
लूच़न प्याला मुच़र ।
साकय पिलाओ हुह्-हा
ब्वह् ब्वहा हाहा मंतुवाला ॥ ४१ ॥

१ 'अनिम्' ङ. पाठः । २ 'बर्येम्' ङ. पाठः । ३ 'देहानन्द' क. आदि पाठः ।

आगर् अजि़ तय् नद् सांज़ी
बान् बरिथ् तांय् फिरिथ् खांसि[1] ।
ख्यन् कमा–तय् व्वपा नर्
बरि बरि तांय् पीव् यख्लास् ॥ ४२ ॥

आगर अज़वूंज़् अमृतूच्य नदा
रज़वूंज़् प्रज़लान् सुदा-बूथ् ।
तीलिथ्-त लदवूंज़् त्रिन् बुवनन् कदा
मीलिथ-त समुद्रूंच पदवी व्वय् ॥४३॥

होश् मेले-ता पोश् फ्वलांनी[2]
गोश् खिलांनी[3] सादू–संग ।
गंज् ज्ञानी अव–रूप ध्यानी
कृपा च्याजी बहु-वांनी रंग ॥ ४४ ॥

सुह् माह शमाह प्रज़लांनी
तमाह्-व्यन् ज़लांनी व्वह् ।

१ 'खासा' ग्वर् अख् माता उपानर्' क. खादि पाठः। २ 'मेलि-त पोश फ्वल्लानी' ग. घ पाठः। ३ 'खलानी' क. ख. ग. पाठः।

अव-रूप [1]प्रयम छुय् मेलांनी
यिमय् पद कौंसि मेलांनी क्याह्[2] ॥ ४५ ॥

मथुरा पथ ब्रोंह् [3]सत-रूप्
मेलुयौ सथ-गथ् त तत्त्व् ।
तेलुयौ रोय-[4]रंगे हर्-रंग
मेलुयौ आत्म–संग–रव् । ४६ ॥

अवल् करेयिम[5] कहन् अट
लट्-दिववनु हांवुनम[6] द्यान् ।
शमर्याम् देह् द्यव अवय् वट
छट् फेरवंनु अवय् म्यांनु पान् ॥
तुष्टुम् त कासूनम[7] नीत्रन् गट
ज़न् चाटस ग्वरी वखनुम[8] ज्ञान् ॥ ४७ ॥

युसुह ग्वर पिता सुय् छुह[9] मोल्

---

१ प्रेम छु' ख ग पाठः। २ 'क' च. 'कै मलाने कयाह्' क्याहय्' ख. ग. पाठः। ३ 'मतरूप' क. ख. ग पाठः। ४ 'राम रगि' क ख. ग. पाठः। ५ 'करेयिन्' ग. पाठः। ६ 'हावुन्यम्' ग. पाठः। ७ 'कासून्यम्' घ. पाठः। ८ 'वख़नस्' वख़नम्' घ पाठः। ९ 'छुम्' ग. पाठः।

सुह् इह् प्रबल् दीप-प्रकाश्।
सुह् इह् सर्व·कलस् उदार् ख्युन्
सुह् इह ईश्वर् सुह लुहँ[१] ग्वर्॥ ४८॥

कंह यिद्[२] दज़न् व्यह् ह्ययि बारे
व्यय् ह्ययि हाह्न अच्यस ग्रख्।
कूह त्रावे वुध्यस् स्वबावे
शहले चन्दन·दारे काय्॥ ४९॥

युस्[३] ब्वह तां व्ययि व्यचारे
ईन्दय्[४] मारे ज़न्-म्वंगर्।
स्यद् तां साद् लागि अथि हुनरे
कैंसिए[५] लंगु-त बारे क्याह्॥ ५०॥

द्राव् वुफे वाव-रूपी[६] गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी।

१ 'सुय् छ्य' २ कद् यद्' ग. 'युद्' ख. पाठः। ३ 'ब्वहा-त' ग पाठः। ४ 'इन्द्रय्' ग. पाठः। ५ 'कैंसि लबु-बारे क्याह्य' क. ख ग. 'क्याय्' च. पाठः। ६ 'रूपी' ग घ. च. पाठः।

पान् मशे तां ध्याना तोशे
    स्वमन् परमानन्द् वांतु तथ्-राशी ॥ ५१ ॥
सुह वा अन्दर न्यबर प्रथ् दीशन्
    कंघव् दीशन् ग्वारान् लूस्तुयं[1] द्रह्
च्यथ् थव् मंडिस अंदर छुय् निशान्
    दुशन् वांलिथ-त[2] दितस छ्रह ॥ ५२ ॥
कैत्यन् कृपा करूथ् पान् स्वगान्[3]
    यिमन् मन् लगान् पानस सूत्य ।
इह व्यूह आविथ सु देह-साधन्[4]
    वातिथ् वानस लाल-रत्न् कथ् बानस् कुसु ॥ ५३ ॥
नव् पाठ् ज़ानस् तव पाठ पडं[5]
    नव् ज़प् जान् सुह् माल् फिर ।
स मुद्रा हाव-तं यव् मदुरु प्याला च्यम्

---

१ 'लूस् तुम द्रह' ङ. पाठः। २ 'त' नास्ति क. खादिषु 'दितस्' ग. पाठः। ३ 'करुथ् पान् स्वगन्' ख. घ. पाठः। ४ 'आव् सुदह सादान्' ग. घ. 'सादान्' क. ख. पाठः। ५ पाठ् पर' क. ख. पाठः।

नद् नाल् रटु ब्ययिनय ज़य-रत्न-माल ॥५४॥

नव् पाठ् ज़ानस् तव् पाठ् पड[1]

सुह पाठ् पानय् मने वातु[2]।

ज़पान् आत्म तु दपान् वानी

पीव् मदु-रस् वाज़ि बरिथ्[3]-तां छिव् ॥ ५५ ॥

तिथु ध्याना हात यिथु ज़ानस् अन्त्

तिथु सहज़ दि-तु यिथु पानस् म्य चह्-तु।

तिथु ब्यय् चह् लाग्-तु यिथु बहुत शंकर-बखूच्

यिथु पानस् मंचूराबनस् नँ[4] कुँह् ॥ ५६ ॥

इहय् कुल् मूल-तु श्वाँह् तुल्

यवा[6] शाख पन-तां फ़ूल्।

दात पय्यव् स मुद्रा पान

रसे सवाँद तु नन्यस् बोय्[8] ॥ ५७ ॥

१ 'पर' क ख. प.ठ । २ 'पान मने वाचू' क. ग 'पान मिनि वाचू' घ. पाठः । ३ 'बरि ताय्' क घ. ङ. पाठः । ४ 'न हिवु' क । 'न हुह्' ग. पाठः । ५ 'श्राह' क. खादि पाठः । ६ 'यव' क. ख. पाठः । ७ 'स्वाद' ग. पाठः । ८ 'नन्यस् ज़ाथ्' ग. पाठः ।

मन्द स-मुदुर् दोनु सांनी
 ल्बकु समाद् नाद-विन्द् चूट्।
दान अखंड मिलायो मखन
 सादिकांरिस द्वायाम् ग्यव्[1] ॥ ५८ ॥
तवु रूप यज्ञा हूमस कारिथ्
 आहुत दिचूस् अंगन् हूँज़्।
[2]ज्योत् पज़ांने कार्नु च्याने
 माने अतूर-त नन्यस् ब्वय् ॥ ५९ ॥
बानु फुटरि-तु पानय् थुरे
 कुसु मारि-तां कस् लगि द्वख्।
पानय् नहावे पानय् पूरे
 [3]कुंसु सोरि—तु कस् यियि दुख् ॥ ६० ॥
प्रथ जिन्सस् अंशा थंवुन्[5]

---

१ 'गेव्' ख. ग. पाठः। २ 'जो तत्पर् जान' क. ख. पाठः। ३ 'कुस्' क. ख. ग. पाठः। ४ 'कुसु मारि' क. खादि पाठः। ५ 'थावुन्' क. ख. ग. पाठः।

अथ्य कौंसि-न चीतन् थवुन्[1]।
तति ज़न् अनुन्-त पूँछ़ा फीरिथ तां
न्यांयुन्[2] ब्यय् मिलावुन् गंजन् सूंत्य् ॥ ६१ ॥
यिवान् पान-त ज्यवान् पानु
रिवान् पान-त निवान् टूख्।
नाना प्रकार गिन्दान् पानु
रिन्दान्[3] पानु-त ह्यवान् पत्थ् ॥ ६२॥
प्ययान् स्वादस् त यिवान् नादस्
वादस् अथ चास छुनु च्यारय्
पीवान प्याल्-त छिवान् पानु
ब्ववान पानु-त चवान टख्[4] ॥ ६३ ॥
रंगिथ वंय द्रायिस् संग-कुय्
म्वक्त म्वख्चू ज्ञान अकुय्।

---

१ 'थावुन्' क ख. ग. पाठः। २ 'न्याबुन्' क. ख. म. पाठः। ३ 'रिम्दान्' क खादि पाठः। ४ 'च्याल् रस्' क. ख. पाठः।

ब्वय बरऩचू–ऱूफ् ग़ारानं[1] ना किंह

[2]वंय न कूँह ब्वय्–तां ना कूँह् ब्वह् ॥ ६४ ॥

द्यान आसख् आस–त चूय्[3]

ज्ञान ग्वाश–त् ग्वाह् आसख् चूय।

विज्ञाना ला·शक मंशख् चूय

आसख् चूय ता ब्वह् ना कुँह् ॥ ६५ ॥

मंडु[4] युसु ज़ाले नारय्

दंडु नौव इह संसारूय्।

दडु सु-ज़िथि न-ता मरे

रचडु युसु गाले[5] सारी आर् ॥ ६६ ॥

[6]सारी बूग्–आहारे निराहार्

न निन्द्रे आसि न हुसि आर

रहिथ् सौरे[7] कर्म न्यथ् बेकार्

---

१ 'ग्रारान्' क ख ग पाठः। २ 'बुवि-त न कूँह बबु' क. ख. पाठः।
३ 'चय्' क ख. पाठः एवमग्रेऽपि। ४ 'मरु युसु नार ज्वाले' क ख. पाठः।
५ 'लागे' घ ङ. पाठः। ६ 'सारि्' क. ख. पाठः। ७ 'सारि्' क. ख.

रुम-रुम् [1]आयि अवतार् ॥ ६७ ॥

ध्यानस् म्य चूह्-त् पानय् ब्वह् चूह
अथि् ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार ।
पानय् पान् पर्ज़ानि–त् पानय् व्यचे
न–त अन् ज़ानस् व्यचिय् ज़ानिथ्[2] कूँह् ॥ ६८ ॥

[3]छुह शाह–त् गदा सुय्–तते
पानय् दात् ख़सान् पूरि रव् ।
[4]कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव् वूरे
फल्-कुलिनूय मूरे रव् ॥ ६९ ॥

कुनि तमाहे कुनि तकांबूरे
शमा युथ् होरे पूरे रव् ।
पव् पव् पलि तय् तस् ना मूरे
वांतित् वात्यस् पूरे रव् ॥ ७० ॥

---

१ 'आव्' ग. ख. पाठः। २ 'न कूँह्' च. ३ 'लुख्' क. ख. ग. घ. पाठः।
४ 'निरय पय्' च. 'कुनि गव्' ग. घ. 'गौ' ङ पाठः।

कृपा-त कारुन् युस् पानय् ज़ाने

मनूय् [1]माने दिन्-तय् राथ

सर्वरूपु-ध्याना युस् पर्ज़ाने

[2]माने मनि-त नन्यस् ज़ाथ ॥ ७१ ॥

युस रूप तारि-त दीफ् संदारे

[3]नाथ सुह् नृप व्यचारे मन्।

किंह मूदि-त किंह् बेमारे

कौंसि ज्ञानु-[4]खूरे तारे नाव् ॥ ७२ ॥

माता रूपी सु म्वदुर[5] दाम त पीव्

तथ् तपासिय् मद् म्वदुर पीव्।

[6]दंडा चडे तथ् रूपी

स्व-रूपी त्रिबांविन् ॥ ७३ ॥

अन्दुर त्रुंखि-तु न्यबूर स्यंदि

---

१ 'मनय् मारे' ग पाठः। २ 'मानि सानि' क. ख. ङ. पाठः। ३ 'नाथ् युस् विचारे' क. ख. पाठः। ४ 'खूड्' च. पाठः। ५ 'समुद्रा' ङ. पाठः। ६ 'दडा चरे' ग. पाठः।

वुदिख्[1] नाग् त ज़ागुख् तंथि।
किंह् बेमारि रस्तिय् मूदी
किंचन विंदु-नत रूंदिय् तंत्य्॥ ७४॥
ना नमुस् न कदाचित् नमंनु
निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा।
आकाश-रूप ज़गि-अन्तर् रमंनु
तंथि नमुस् तथा सुह् नमंनु॥ ७५॥
पद् ह्यायि-त पाद् छुह्[5] मंगान्
अंगन् अंगन् अप्योम् रूफ्।
अंग्न-कुड् यिथु रूफ् संदारे
अमृत् दारे पीवान् दीह्॥ ७६॥
पानु सुह मानि-त ब्ययर्न् सवारे
निश काठस् तारे चन्दन् बोय्।

---

१ 'वुदुख्' क. ख. पाठः। २ 'सतिय्' ख. पाठः। ३ 'नित ममनो' ग. घ ङ. पाठः। ४ 'रूफ्' क. खादिपाठः। ५ 'छुम् अगान्' ग पाठः। ६ बिय् न स्वारे' ग. घ. पाठः।

काठ् यिथ् बोथ् ह्यायि चन्दन-दारे
सहज़ूय् गारि-तु नन्यस् जाथ् ॥ ७७॥

दाथ् चालि-तु क्याह् व्यचारे
पानु मरे तय् संदारे व्यय्
व्यह् गालि-त अमृत् तारे
तिथुयय् रूप चय वरिय् क्याह् ॥ ७८॥

अर्पाविथ् ज़न्म चिदानन्द्
हंसद्वार रव-रग् ता रूम्।
कृपा ज्ञान कारुनु कर्म
दर्म सूत्य निरालम्बा रूफ् ॥ ७९॥

यति कुनि त्रुठयन् तति पानय्
सर्वव्यानूय् रटुमस् रूफ्।
दीप प्रकाश तीज़ रव् पानय्

१ 'ग्वारि-त' ग.घ.ङ पाठः। २ 'गालि-त ख्या त विचारे' ग.घ.पाठः।
३ 'रूफ' ख.ग.पाठः। ४ 'तति लुय् पानय' क.खादि पाठः।

म्य ज़ान्यौव् सुह् ज़ि [1]म्याने छुह् ॥ ८० ॥

ज्ञान आकाश् वांनी निर्वांनी

मनि सहाय थान्-थानय् छुह् ।

[2]आ राम ही राम् बोलो पवन्

ब्वह् ब्वय-तां म्यानिय् छयुयह् ॥ ८१ ॥

शये आसख् शये छुयस्

लये पान् ब्वयिय् छुयस् ।

नीरिथ्-त गछान् तेलिथ्-त यिवान्

मीलिथ् पान् तोत्य [3]दयुय् छुस् ॥ ८२ ॥

नादय् बिन्द् पदय् परम

मदुय् मांरि-फतुकुय् छुयस् ।

विष्णु—ब्रह्मा महेश्वरा

कृष्ण् ब्यय् श्याम-सुन्दर् छूस् ॥ ८३ ॥

---

१ 'म्यानि छुह्' घ, ङ. पाठः। २ 'आ राम राम बालो पवान्' च. 'बोलो पान' ग. पाठ। ३ 'दयिय् छुस्' क. ग. घ पाठः।

[1]गोम औवतार सुह् महादीव्
सुह् वा सुह् वा सुयय् छ्युस् ।
पूरा तोले रामा बोले
ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि छुस् ।
यिह् किंह् काँछि तिह्--किंह् दिये
दुकान् त्रपित समुद्रुय् [2]छस् ॥ ८४ ॥
दिशान्-तु दीशन हैरान गयिस्
निशान् म्य-अनुमस्[3] शुन्यालय् ।
छलु [4]लँदु चर्कस-तु कल् आयि मशान्
यिमन् शन् मानि [5]द्वशान् ब्वंय् ॥ ८५ ॥
छु-नु कुने छु-ना कुने
वुछह् ओर् न योड् न कुने ।
दिय् फश तॅलॅ मूल न कुने

---

१ 'राम औवतार' ङ. पाठः । २ 'छुयस्' ग पाठः । ३ 'अनुस्' ग.घ. 'अनुम्' ङ पाठः । ४ 'लदुमस्' क. ख. पाठः । ५ 'सानी वुषार्' क. खादि पाठः । ६ 'वुछुम्' क. ख. ङ. पाठः । ७ 'तोले' क. खादि पाठः ।

छ़िवय् चीतन् त स्वंरि-तोन् कुने ॥ ८६ ॥

ओर-ति ज़ीवा योर-ति ज़ीवा[1]
जीवस् जीवा रस् ख्यावान्।
युसु छ़युह् नाना-रंग रुवुंनु[2]
छ़ुह प्रथ् कुने वातवंनु
च्यांनु म्यांनु ल्वांनु बिंनु[3] बिंनु तय्
न-त रानु सानुय् अकुय्[4] तय् ॥ ८७ ॥
न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पातांली
न तली न पांरी नापारी च्वपांरी[5] ज़यथ्।
अन्तरा शुद्धम् सुशान्तम्
निर्मलम् सर्व तथ् द़ीवा दींव् ॥ ८८ ॥
कौन्[6] मर-ता कौन् प्यतारे
समुद्रस सारे तारे थाह्।

१ 'ओडाति ज़ीवा योड-ति' क. ख. पाठः। २ 'रगरवनु' च. 'रंगारवनु' घ ङ पाठः। ३ लकानु बिनु न-त' ग. पाठः। ४ 'अकुय् व्वय्' क खादि पाठः। ५ पारि च्वपारी' क. ख. ङ. पाठः। ६ 'कूँह न मांर-त कूँहून' ङ. च. पाठः।

मद्दु-रस गंड्ड·ता शशि औतारे
पानस् पान् पुशारे गाह् ॥ ८९ ॥

ह्यमालय् शून्[2] यवय् ल्युख पांवुम्
तवय् पाँछ् स्मारुम् एका अन्त् ।

न दाह् दिये ना केंछ् प्राव
ठह्रावे न तु स्निहँ[3]नावे ॥ ९० ॥

कांत्ति पूरे अकांत्तित् वाने
पानय् दाता बुख़्ता आसे ।

वासंज़ि गँाल्[4] ब्राँथा त्रावे
नाना-रंग सीर् नाथा बावे ॥ ९१ ॥

[5]माता पिता त् भ्राता पानय्
प्रथ् थानय् न कथ् नये ।

निराकार रूप लांगिथ् पानय्

१ 'पानुय्' क. खादि [illegible]ठः। २ 'शून्य वालिख् तवा पंछ् स्मारुम् एकान्त्' ग. पाठः। ३ 'स्निह नावह' क. ख च. 'स्निह न किंह' ग. पाठः। ४ 'लागे' ग. 'गालि-त ब्राँथ' क. ख पाठ। ५ 'मात पिता-त भ्रात पानै' च. पाठः।

सथ् पानय्-[1]तु कथ् सनु नये ॥ ६२ ॥

कौन जाने तेरा स्वभाव

प्रभाव परमानन्दा जी ।

जो स्मरे हृदय में पावे

जैसी प्रभा भास्करा जी ॥ ६३ ॥

सारी तत्त्व् आहारिम् गार् चापुम्

ब्रमवांवुम् अखंड् मण्डल् तां पाताल् ।

हा-हू सूतिन् ग्यत् व्यगलांवुम्

अङ्ग नांवुम विशेषा गंग् ॥ ६४ ॥

च्यथय् लगिय-तु पर्दुय पान् ज्ञान्

च्यत्थय लगिय् पर्ज्ञान् पान् ।

च्यत्थय लगिय् ल्यठु छुयय्-तु पर्ज्ञान्

ल्यंठु ज्ञान् म्यूंठु-तु श्वद् ज्ञान् पान् ॥ ६५ ॥

वाव् रठ् द्वादशा[3]न्त रव् संगटे

---

१ 'न कथ' क ख ग. पाठः । २ 'उपर्ज्ञान्' ग. पाठः । ३ 'द्वादश रव्' क. ख ग पाठः ।

मायाय् तृष्णाय् मारे मन् ।
ब्राँथ त्राव् नाथ् छुय् पनुने गरे
साथ् रठ् सुय-तु ज्ञानदीह ॥ ९६ ॥
बाव् ब्यन् ब्यन्-तु नाव् [1]छुस् क्रेठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय् ।
लय् पवनस् म्वय छयुय् बानस्
मानुंन्-तु पानस् निश छुयय् दय् ॥ ९७ ॥
मूर्थाह् करिथ्-तु अमूरथ् पचीय्
खाख् छय-तांय् क्याह् पचे ।
पँछ महाबूत करिन् फचे
ह्यांच् माया तय् करि-ना [3]बुत् ॥ ९८ ॥
मनि गालि-[4]तुँ पानय् व्यचे
अहं गारि-[5]तुँ क्याह् सनु यछे

---

१ 'नाव छुम्' क. ख. पाठः। २ 'करिनम्' क. ख. पाठः। ३ 'नाबूद्' ख. पाठः। ४ 'लागित' ख. ग. ङ. 'ललित' क. पाठः। ५ 'ग्वारि-त घ. ङ. पाठः।

ब्ययन् ठडि डालि–तु पानय् नचे

वाह्-वाह गुंलि फ्वलि-ना तुल्-ना मूल् ॥९९॥

गंडिथ्–तु डेंटोन्[1] द्रायाय् ब्वह् तस्

क्याह् लबांव् तस् आसनु जाय् ।

न ब्वयि पाफ् तस् न पुज़ ख्वय् तस्

आसान् ब्वय् तस् न आसान्–जाय् ॥१००॥

संबूर–एरू[2] वातान् ब्वह् तस्

तंबूर–साज़य् गूँ यस् ब्वय् ।

शशि दारि लव दि[3]महा ब्वह् तस्

गंबूर–तोतस् क्याह् बोल्याह् ॥१०१॥

अनेक नंजू मेज्यांम दर्याव्

अवय् स्वबाव आव् स्वरूफ् ।

नँ[4] किह थवु–तु ना किह त्राव

१ 'दराहु' पाठः। २ 'व्यूर' ङ पाठः। ३ 'दि महाबूतस्' क.ख. 'दिमा' च. पाठः। ४ 'न.' क खादि पाठः।

बहु दीप आव नह छिपा रूफ् ॥ १०२॥

आकाश सुह मदुर वछ़ुन दार

तवय-तार रटुमस् पव् ।

दीपा शशि-रव् रूप औतारे

बहु-आकार न-तु निराकार ॥१०३॥

[1]युस्-सा कन्दि बस्मा करे

पसमंद् तिहंन्दु शून्या-रूफ् ।

शास्तर् शस्तर् क्याह मूचे़रे

लुहारु-अग्न् [2]सुह मार्यस दीह् ।

किंह-नु सुह मंगे क्याह[3] नु स्मरे

ध्यान् सुह वरे बिय-तु पान् ॥ १०४॥

[4]अनाहतु शब्द् मना गंडिथ्

पान मंडिथ् रिशीयस ।

---

१ 'युस् मा' क ख. ग. घ. पाठः। २ 'अग्न् समारिस्' ग. पाठः।
३ 'किंह न सरे' ग. पाठः। ४ 'अनूपन् मन्' क. खादि पाठः।

हाकै बानु बरिथ्–तु पानु
साकै वाकय् आसि दांनिस्त् ॥ १०५ ॥

दूर चल तह् हुरुय् कांछियह्
पूरे खसि हाम्र आयित् ।
सुय् शन् आशीनु क्वरुनय्
न शीतल् शीतल् माह् ब्वखु ॥ १०६ ॥

दर्यावु–अन्दर् अंशाह् आव्
ज़ाव् म्यच्य–तु ज़ायिस् म्यचू ।
म्यच्यय् बूग–तु न्यामचू रुयाव्
म्यचिय् करुस् पांरिज़ान्
अवय् म्यचि बज्योव् म्यह चूह्
पतोह् अपिथ म्यचिय् गव् ॥ १०७ ॥

आयाव् वर् हाथ् यति स्वर् रहुस्–ना
समुरुन् म्यचे पाजु तु वाव ।

१ 'रहुस् न स्मारिन्' ग. पाठः । २ 'वथदज · त' ख. पाठः ।

अंग्न् आव्-तु वाह वाह रंग् प्यव्
नचान् नचान् सपुनुस् नाव् ।
आज्ञा आयि-तु चलु हा चूर्-ज़न्
वाव् आंसु [1]थ्वदन्यत् क्यथ-सन् प्यव् ॥१०८॥
रहे निशाना ईश्वर-सुन्दु नावा
कति आयाव्-तु कंतु-सन गव् ।
समरिथ्-तु सादिथ् तमि कज़ाव्
दीव ह्यत मुरली तु सीव् करहास् ॥ १०९ ॥
छुननस् लूबं[2] क्रूद काम् मूह मद् अहंकार
चाव् संसारस् तु[3] अमल् कर्यस् ।
पतोह आमाल् अमल् होरने गाव्
प्वंछ आयाव-तु कछ क्या निये ॥११०॥
ईश्वरि[4] वाद् ह्यथ् य्वत् कजाव्

१ 'वथद्ज्-त' ख. पाठः। २ 'काम क्रे द लोब' क. खादि पाठः।
३ 'त' क. खादिषु नास्ति। ४ 'ईश्वरी' च. पाठः।

यति आव्-त आंसु मनुष्या-रूफ् ।

युसुह् देव [1]स्वरि मनस्-त बाव प्रथ ज़ुवस्

तिम् ज़ूह् सीव् कस् मालि अथे आय् ॥१११॥

तिमय् छिय् मनुष्य न-तु किंह् द्राय गुपन्

यिमन् आदन् सुह् पान् मशिथ् गव् ।

प्ययख् बुडिथ् चीतन् सु-दन् सोर्यख्

[2]छ्यंजि बान् कति मालि दरकार् [3]यियें ॥११२॥

सहज-त आनन्द् रह हा दांरिथ्

पानय् पान् संदांरिथ् [4]क्यथ् ।

कृपाय् च्याज़े गछ़-हा तरिथ्

ईश्वर-रूफ् [5]स्वरिथ् तह क्यथ् ॥११३॥

सहज़-त ज्ञान् रज्यम् परमानन्द्

अव-रूप सानन्द् आसिय् [6]कोई ।

---

१ 'सरि' ख. ग. पाठः । २ 'छ्यन्' क. ख. पाठः । ३ 'यियू' च. पाठः । ४ 'क्यिथ्' ग. घ. पाठः । ५ 'सहज़ न' ग. पाठः । ६ 'सरिथ्' क. ख. पाठः । ७ 'आसख् तये' ग. पाठः ।

आत्मा रज़्यय् वांचू मा स नद्

मदु[1] सा सुह् नद् वहं वज़ी ॥ ११४॥

ओं श्रीगुरवे नमः।

बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्

वायु नाकाशम् अवां[2] ताह सर्वम्।

न ज़ि ब्रह्माण्डम् नच़ खात्म-आत्मम्

शक्ति स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ १ ॥

पुरुषो न पुरुषात्[3] विमर्शो न मर्शात्

वर्ना-तीज़ो शान्तं अन्तर् आकाशम्।

सूक्ष्मो न विस्तार् न परं व्यापारम्

न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ २॥

थावर् न ज़ंगम् नह् च़तुर्वर्णम्

ज़ग् न च़राच़र् तथ् परमाकारम्।

सथ् नाँ[4] असंतु अछिन्नदारम्

१ 'मदुरसा' क. खादि पाठः। २ 'अवता' क. ख. पाठः। ३ 'पुरुषाथात्' क. खादि पाठः। ४ 'सन्नसतोच्छिन्न' ग. घ. पाठः।

सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम् ॥ ३ ॥
जोगो जुगान्तर[1] संन्यास-वर्णम्
तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोऽहम्[2] ।
अचिन्त्यरूपं परमाकारम
थ्यर् केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ४ ॥
माता न पिता ब्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम एको केवलोहम ।
ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला
तथ युस् अक़ेला परं ब्रह्म सोहम ॥ ५ ॥
मोहो न ब्वदि नच वैराग्यम
नच राग-दोषम्[3] निर्वैरशान्तिः ।
स्वप्न् नु ज़ाग्रथ् तथ् शुद्दबोदम
सूक्ष्मो स्वयम्बू परं ब्रह्म सोहम ॥ ६ ॥
पादू न बीजम[4] चतुर्बुजाकारम्

१ 'जोगन्तर्' ग घ च. पाठः। २ 'प्रसिद्धोहम' क, खादि पाठः'
३ 'द्वषम्' ङ. पाठः। ४ 'बीजन्' ग. घ. च़ पाठः।

न त्रि-ज़ग् चराचर् अनन्तरूपम् ।
सहस्रनामम् निरादारम्
शुद्द-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ७ ॥
स्यदू न स्यजू विद्या न गति
रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम् ।
खगाकाश् उल्लंगिथ् नच़ राज़योगम्
नु लम्ब् न निरालंब् परं ब्रह्म सोहम ॥ ८ ॥
रूपं न रस् नु स्पर्श् गन्द् न देहो
दुयी दयस् न छुस् केवलोहम् ।
ज़ीवो जीवता न वर्ता न वार्ता
कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ९ ॥
इडा न पिङ्गला नच़ ब्रह्मनाडी
स्वयिय् सुषुम्[3]ना पायाहमेव ।
अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था

---

१ 'खाकाश' क खादि पाठः। २ 'दयिस्' ख. ग. 'छयस्' ख पाठः।
३ 'स हि' घ. 'स हि सुषुप्ता' 'सा हि' ग पाठः।

आनन्दरूपंद् परं ब्रह्म सोहम् ॥ १० ॥

इति स्वानुभवोल्लासदशकम् ।

तथ् अन्तर दृष्टि[1] संबांवुम्
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम् नये ।
लल्ल् माधव शिव् ईकांवुम्
ब्येकांवुम् दीह् म्य पानये ।
च्यत्थ अन्तर मन्ज़लि सांवुम्
ललावुम्-त म्य बांवुम् नये ।
पूर-विचार् प्रांगित्[2] आंवुम् ।
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्-नये ॥ २ ॥
यमि तराज़ि दीह् संबावुम्
मावु आंवुम् सुय् पानये ।
मन सथ-असथ् सिरावुम्[3]

१ 'दृष्ट' क. खादि पाठः । २ 'प्रगितु' च. पाठः । ३ 'सिर्-रादुम्' घ. ङ. 'मि रावुम्' ख. पाठः ।

लांनु त्रांवुम्-त कुस[1] म्वल् दिये।
व्वज़् म्यांनु सांरुय तवय् छुस् सांवुय्
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्-नये ॥ ३ ॥
दीह--अन्तर सुषुप्त् सांवुम्
जांगांवुम् तुरीया आये।
अनाहत् आनन्द खिलांवुम्
मिलांवुम् अनामय् च्यये।
तद्-रूप म्य-पान ललांवुम्
ब्वह् छयस् सांवु-त किह्[2] रांवुम्-नये ॥ ४ ॥
कलि--कलि मिलवांवुम्[3]
ललांवुव् रूफ् पानये।
तव अन्तर् दीह नांवुम्
पीवांवुम् रस् पानये।
तव तुष्टि निदाना प्रांवुम्

---

१ 'कुसु' क. पाठः। २ 'मिलनावुम् लाल्ल ह्रावुम्' क. ख. ग. पाठः।

ब्वह् छ्यस् सांवु-तु किंह्[१] रांवुम्-नये ॥ ५ ॥

ब्वद् ख्ययम् च्ययम् प्रखटेयम्

च्योम् वैराग्य अत्तय् दाम् ।

दून् गूचर व्यचार् सांवुम्

निनावु[२] रिशियस् तवय् ।

आदि श्रुथ आचारांवुम्[३]

ब्वह् छ्यस् सांवु-तु किंह् रांवुम्-नये[४] ॥ ६ ॥

न खूचस् न कूँह् लज्जुम्[५]

व्वंपजु तिय् पानय् आंनुम्[६] ।

न म्य करु-तु न संपनु

रंजु सहज़ हीत् अवय् ।

रीच-तीच-तु प्रीच निबांवुम्

ब्वह् छ्यस् सांवु-तु किंह्[७] रांवुम् नये ॥ ७ ॥

---

१ 'किंह् न' ग. पाठः । २ 'निनावु रीशस्' घ पाठः। ३ 'आचार् आवुम्', क. खादि पाठः । ४ 'नह्' च. पाठः । ५ 'लज्जुस्' च. पाठः । ६ 'आन' क. खादि पाठः ।

तत्त्व प्रसंदिथ्[1] दय् प्रावुम्
अङ्ग गालिथ् ज़ग् मा [3]म्वये
ना ख़ोच [4]नालवन् करि-ज़े
प्राज़ि न्यर्मल् श्वद्द शिवय् ॥
दिन् प्रलय् [5]तक् एकावुम्
ब्वह् छ्यस् सावु किह् रावुम् नये ॥ ८ ॥
एकतु परमबूद् सदानन्द्
तसि विदीह समाद् यस् स्वर् आसे।
रिद् स्यज् विद्या युसु आदरु आसि।
तत्पद्वी रसे बिय् क्याह् आसे ॥ ९ ॥
रिद्द-स्यद्द-विद्या आज़ि आगरय्
[6]तसि गरय् व्यबव् सागरय् ग्वाह्।
करि सूर्य उदय् चलि गटकारूय्

१ 'तत् प्रसन्ना उदय्' ग. 'उदय' क ख. 'प्रसन्दि उदय' च. पाठ
२ 'लागिथ्' घ. पाठः। ३ 'ज़यमा मयी' च. पाठः। ४ 'न. [illegible] लोकाव्' ग. पाठः। ५ 'तथ्' क. खादि पाठः। ६ 'तस' च. पाठः।

सहज़ विचार तथ् सारबूद् ॥ १० ॥

ब्रत् सथ् तत्त्वबूद् श्वंद्दि[1] आचारा

इय् व्यवहारा वीद–तां यूग् ।

चह् कुस् ब्वह् कुस् कूँह् व्वचारा

अंछिन्न–दारा सुय् चेन् रूफ् ॥ ११ ॥

यिह् रूफ् सुह् रूफ् पर–रूफ् वले

आव कले निरंज़ना रूफ् ।

यिह शूब लूबस्[2] ज़ान्-वेगवले

अज़रामर् आसे श्वद्द·दीह ॥ १२ ॥

ओं तत्सत् ॥ आदितः श्लोकाः १४६ ॥

इति श्रीशारिकादेव्यवताररूपायाः श्रीमाधवदरस्यात्मजायास्त-
पस्विन्या रूप्यभवान्या रहस्योपदेशः समाप्तः ।

---

१ 'शुद्दि' ख. पाठः। २ 'लूब म जान्' क. खादि पाठः।

पं० विश्वनाथ एण्ड सन्स, 'पायोनियर प्रेस'
फतेह कदल, श्रीनगर - कश्मीर
मुद्रणालये मुद्रितम् ।